ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

आनंदमय शिक्षा और बहुसांस्कृतिक समाज

==========

डॉ. शैला चव्हाण
सहयोगी प्राध्यापक
अॅड. व्ही. जी. हांडे शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, नाशिक

==========

सारांश

विविधता में एकता यही पहचान पुरे विश्व में भारत की है| विभिन्न जाति धर्म, वंश, पंथ और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले लोग यहाँ रहते हैं, दिन-ब-दिन हम भी एक साथ सभी जीवन यापन करते हैं, और हमारी रोजमर्रा की जिंदगी सुख और शांति से गुजारने का प्रयास करते हैं| और यह सब हमारे लिए आसान नहीं होता है, क्योंकि हर एक को अपना धर्म, वंश, जाति, समाज, भाषा, अत्यंत प्रिय होते हैं| यह हम सब के लिए अत्यंत संवेदनशीलता का कारण भी होते हैं| परंतु खंडप्राय देश के नागरिक होने के कारण प्राकृतिक रूप से विविधता का स्वीकार करते हुए हमें विविधता में एकता को निभाना है| हमे भारत देश में एकता और अखंडता बरकरार रखनी है| यही तो हम सब का प्रथम कर्तव्य है| तभी तो सीना तान कर कह सकते हैं 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा' और इस पंक्ति को प्रत्यक्ष रूप में लाने के लिए हमें प्रयास करने होंगे| सभी को राष्ट्रीयता की भावना को मन में रखकर राष्ट्रप्रेम का परिचय देना होगा तभी यह कहना उचित होगा 'देश हा देव असे माझा|' विविधता में एकता की भावना के लिए हर भारतीय देश, समाज और व्यक्ति के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहे हैं| राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीयता की भावना की ऊंचाई का कोई नापतोल नहीं है| इसका प्रमाण भारत का स्वतंत्रता संग्राम है| यहां अपनी मातृभूमि के लिए मर मिटने वालों की कमी नहीं है, इस कार्य में पुरुषों के साथ साथ महिला भी पीछे नहीं रही, अनेक महिलाओं ने इस संग्राम में अपना योगदान दिया था|

मुख्य संबोध

राष्ट्रीयता, आनंदमय शिक्षा, बहुसांस्कृतिक समाज, भूमंडलीकरण

==========

- **प्रस्तावना**

मानव एक सामाजिक प्राणी है| वह समाज में अपना जीवन यापन करना पसंद करता है क्योंकि समूह में उसकी जरूरतें पूर्ण होती है| समाज में वह कौंटुबिक, सामाजिक, आर्थिक, भावनिक, राजकीय रूप से

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

सुरक्षितता महसूस करता है| समाज जीवन में सुरक्षितता के साथ स्थिरता भी प्राप्त करता है| व्यक्ति समाज में जन्म लेकर पलता है, बढ़ता है, विकसित होता है और अंत में समाज से ही विदा लेता है| अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक हर एक व्यक्ति समाज का सहयोग प्राप्त करता है| यहां पर समाज याने कोई जाति या जनजाति नहीं तो हम जहां पर जन्म से लेकर अंत तक रहते हैं वहां के परिवेश में मनुष्य अपना रहन-सहन, केशभूषा और वेशभूषा, खान-पान, धार्मिक मान्यताएं, उत्सव और त्योहार, विचार आदि प्राप्त करता है| और सब के साथ भाईचारा और अमन के साथ जीवन यापन करता हैं | ऐसे समाज मान्य व्यवहार किसी व्यक्ति द्वारा बनते नहीं वह तो संस्कृति से प्राप्त होते हैं, इसी कारण यहां संस्कृति की परिभाषा देना उचित होगा संस्कृति की परिभाषा – डॉ. दिनकर के अनुसार- संस्कृति जीवन का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं|

- **शोधविषय विवेचन**

हम जिस परिवेश में रहते हैं, वहां पर विभिन्न जाति धर्म, वंश, पंथ और भिन्न–भिन्न भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं, दिन-ब-दिन हम भी एक साथ सभी जीवन यापन करते हैं, और हमारी रोजमर्रा की जिंदगी सुख और शांति से गुजारने का प्रयास करते हैं| और यह सब हमारे लिए आसान नहीं होता है, क्योंकि हर एक को अपना धर्म, वंश, जाति, समाज, भाषा, अत्यंत प्रिय होते हैं| यह हम सब के लिए अत्यंत संवेदनशीलता का कारण भी होते हैं| परंतु खंडप्राय देश के नागरिक होने के कारण प्राकृतिक रूप से विविधता का स्वीकार करते हुए हमें विविधता में एकता को निभाना है| हमे भारत देश में एकता और अखंडता बरकरार रखनी है| यही तो हम सब का प्रथम कर्तव्य है| तभी तो सीना तान कर कह सकते हैं 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा' और इस पंक्ति को प्रत्यक्ष रूप में लाने के लिए हमें प्रयास करने होंगे| सभी को राष्ट्रीयता की भावना को मन में रखकर राष्ट्रप्रेम का परिचय देना होगा तभी यह कहना उचित होगा 'देश हा देव असे माझा|'

विविधता में एकता की भावना के लिए हर भारतीय देश, समाज और व्यक्ति के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहे हैं| राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीयता की भावना की ऊंचाई का कोई नापतोल नहीं है| इसका प्रमाण भारत का स्वतंत्रता संग्राम है| यहां अपनी मातृभूमि के लिए मर मिटने वालों की कमी नहीं है, इस कार्य में पुरुषों के साथ साथ महिला भी पीछे नहीं रही, अनेक महिलाओं ने इस संग्राम में अपना योगदान दिया था| उद्देश्य यही कि अपने देश की स्वतंत्रता, सामाईकता, एकता, अखंडता और स्थिरता| देश के प्रति इतनी प्रखर भावना शायद अन्य कई पर दिखाई दी होगी| इसका हमें आज भी अभिमान है, इस भावना के सामने हम नतमस्तक हैं|

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

आज वसुधैव कुटुंबकम तथा भूमंडलीकरण के दौर में सारा विश्व मानो नजदीक आया है| सभी के लिए सभी राज्यों ही नहीं तो राष्ट्रों के द्वार भी व्यापार, तकनीकी, पर्यटन और शिक्षा के लिए खुल गए हैं| आज स्थानीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक सब एक दूसरे के लिए आवश्यक बन गए हैं| एक दूसरे की जरूरत बनते जा रहे हैं| इसी कारण आज आवागमन की कोई सीमा निर्धारित नहीं है| हर एक के लिए तरक्की के द्वार खुल गए हैं| हर एक अपनी तरक्की के लिए अपना गांव, शहर, राष्ट्र छोड़कर सीमा पार कर रहे हैं| इसलिए हमें भी 2020 के लिए देखा गया 'महासत्ता' बनने का सपना अगर हमें आगे चलकर पूर्ण करना है, तो हमें भी आपसी रंजिश, आपसी संकुचितता छोड़कर अपनी सीमाएं बढ़ानी होंगी| अपना मन सीमा वीरहित बनाना होगा| इसलिए इसकी शुरुवात पाठशालाओं से करनी होगी| यहीं पर यही मूल्य का संस्कार करना जरूरी होगा कि सारा विश्व एक घर है| और तभी शिक्षा का मूख्य उद्देश्य छात्रों का समतोल विकास का अर्थ सफल होगा| मानसिक तौर पर हमारे छात्र सक्षम होंगे और हर एक के प्रति अपनी स्वच्छ एवं शुद्ध भावना रखेंगे| और इसकी शुरुआत तो हमें ही करनी है, और इसके लिए एक सशक्त माध्यम की जरूरत है, और वह माध्यम है शिक्षा| शिक्षा याने अरस्तु के अनुसार – "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है|" वैसे तो हमारे देश के और पाश्चात्य के अनेक विचारवंतो ने शिक्षा की भिन्न परिभाषाएं बनाई है| परंतु अरस्तु द्वारा दी गई परिभाषा का अर्थ है स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन जो व्यक्ति के समतोल विकास के साथ साथ यशस्वी नागरिक का भी निर्माण करती है| क्यों की आज के छात्र कल के इस देश के जिम्मेदार नागरिक होंगे|

महात्मा फुले जी ने सही कहा है कि शिक्षा समाज परिवर्तन का साधन है, इसलिए हमें छात्रों को शिक्षित करना है, सही मायने में उन्हें सयाने करने हैं, जिससे वह सही गलत का भेद समझे, व्यवहार तथा भावनाओं में भेद करना सीखें, हर एक काम सोच समझकर करें ताकि उनका जीवन सही ढंग से बीते| और यह तब संभव है जब उनका मन और मस्तिष्क संयमित हो, और इन दोनों में संतुलन करना भी शिक्षा के माध्यम से ही संभव है| इसलिए उन्हें शिक्षा की ओर आकृष्ट करना होगा, शिक्षा का सही अर्थ समझाना होगा| इसलिए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, अध्यापन पद्धती, और प्रत्यक्ष कक्षा का अध्यापन सूखकर होना आवश्यक है| आनंदमय शिक्षा उन्हें परिवार के सामान विद्यालयों की ओर आकर्षित करेगी| आखिर शिक्षा ही तो व्यक्ति विकास का साधन मात्र है| और यह आनंदमय शिक्षा हमारे छात्रों को संपूर्ण रूप से विकसित तथा प्रकाशित करेगी| इसलिए आनंदमय शिक्षा का होना आवश्यक है| आनंद, सुख या खुशी की शास्त्र शुद्ध व्याख्या करना आसान नहीं क्योंकि वह एक मानसिक स्थिति है| अर्थात आनंद उस व्यापक मानसिक स्थितियों की व्याख्या करता है जिसका

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

अनुभव मनुष्य और अन्य जंतु सकारात्मक, मनोरंजक और तलाश योग्य मानसिक स्थिति के रूप में करते हैं इसमें विशिष्ट मानसिक स्थिति जैसे सुख, मनोरंजन, खुशी, परमानंद और उल्लासोन्माद भी शामिल है|

आज भूमंडलीकरण के कारण विभिन्न वंश, धर्म, जाति, पंथ, भाषा में भिन्नता वाले लोग एक साथ रह रहे हैं और जिन्हें आधुनिक काल में 'बहुविध सांस्कृतिक समाज' की संज्ञा प्राप्त हुई है| इनकी विशेषता है कि इन सभी की भाषा, कला, रूडी परंपराएं, नीति नियम, धार्मिक मान्यताएं और विश्वास, खानपान, रहन-सहन, समता तथा आदतें भिन्न-भिन्न होती है| यह भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक विशेषताएं होने के कारण यह बहु सांस्कृतिक समाज कहलाता है| और हमारे छात्र भी इसी बहु सांस्कृतिक समाज का हिस्सा बन गए हैं| हमें अब इसी समाज में रहना है, जीवन यापन करना है, स्वयं समाज तथा देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाना है| इसलिए हमारी शिक्षा नीति ही छात्रों के लिए आनंदमय शिक्षा की होनी चाहिए| उन्हें शिक्षा के प्रति आकर्षण निर्माण होना आवश्यक है| तभी तो वह अपना सामाजिक जीवन सफलतापूर्वक जी सकेंगे| क्योंकि इस बहुविध समाज में जब छात्र रहेंगे तो परस्पर संस्कृति के साथ धर्म, वंश, जाति, मान्यताओं का आदर करना सीखेंगे| जिससे आपसी भाईचारा बढ़ेगा, सामाजिक स्वास्थ्य और देश की एकात्मता सुरक्षित रहेगी| इसी कारण शिक्षा के माध्यम से यह कार्य संपन्न होगा, और इसिलिए हमारी शिक्षा आनंदमय होना जरूरी है|

इस बहुविध सांस्कृतिक पार्श्वभूमी वाले समाज में आनंदमय शिक्षा से छात्रों में उच्च नैतिक गुण और मानवीय गरिमा बढ़ानी होगी, आपसी सहयोग इसका मुख्य आधार होगा| परिणामतः संस्कृतियों की विविधता का सम्मान और साथ में संरक्षण भी होगा| व्यक्ति का आत्मविकास, परस्पर समान अधिकारों का भी सम्मान होगा| और साथ ही शिक्षा के माध्यम से राजनीतिक, राष्ट्रीय, आर्थिक के साथ-साथ आध्यात्मिक मूल्यों का भी विकास होगा| युवा पीढ़ी में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा| सामाजिक संवाद, सहयोग से सकारात्मक तथा सहिष्णु वातावरण का निर्माण होगा| सारे देश में अमन का राज स्थापित होगा|

इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा के माध्यम से ही परस्पर संस्कृतियों के आदर, सम्मान तथा संरक्षण हेतु विभिन्न उत्सवों का आयोजन, परस्पर संस्कृतिक देन हेतु वार्तालाप, व्याख्यान, चर्चा, प्रदर्शन आदि का हेतूतः आयोजन| उदाहरण - पाठशालाओं में ही परस्पर धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हो| उससे परस्पर संस्कृति की अच्छी बातों का परिचय होगा और आपस में आदर भाव में वृद्धि होगी| शैक्षिक के साथ-साथ सामाजिक समस्याएं नष्ट होगी| सभी और शांति और अमन का राज होगा, तब हम सब मिल कर गर्व से कहेंगे 'मेरा भारत महान|

- **निष्कर्ष**

ISSN no. 2454-2695
Vol 7 Issue 8 August 2021

1. अपनी मातृभूमि के लिए मर मिटने वालों की कमी नहीं है, इस कार्य में पुरुषों के साथ साथ महिला भी पीछे नहीं रही, अनेक महिलाओं ने इस संग्राम में अपना योगदान दिया था|

2. व्यक्ति समाज में जन्म लेकर पलता है, बढ़ता है, विकसित होता है और अंत में समाज से ही विदा लेता है| अर्थात जन्म से लेकर मृत्यु तक हर एक व्यक्ति समाज का सहयोग प्राप्त करता है|

3. विविधता में एकता की भावना के लिए हर भारतीय देश, समाज और व्यक्ति के प्रति अपना कर्तव्य निभा रहे हैं|

4. शिक्षा स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन जो व्यक्ति के समतोल विकास के साथ साथ यशस्वी नागरिक का भी निर्माण करती है| क्यों की आज के छात्र कल के इस देश के जिम्मेदार नागरिक होंगे|

- **संदर्भ**

1. www.kailasheducation.com
2. विक्रम सारूक, शैक्षणिक तत्वज्ञान, 2012, इनसाईट पब्लिकेशन्स, नाशिक
3. अरुण सांगोलकर, नवीन जागतिक समाजातील शिक्षणाचे विचारप्रवाह, 2010, इनसाईट पब्लिकेशन्स्, नाशिक